अहले मदीना का अमल

<u>अल्लामा शहाब ख़फ़ाजी मिसरी नसीमुर्रियाज़ शरहे शिफ़ा क़ाज़ी अयाज़ में लिखते हैं :</u>

هذا معا هده اهل المدينه

“ यह अहले मदीना का तरीक़ा है के मुसीबत के वक़्त वह या मुहम्मदाहू ! पुकारते हैं।”

इबने उमर का अमल

<u>इमाम बुख़ारी अपनी किताब अदब अल मुफ़रद में नक़ल करते हैं</u>

“ अबू नुएम रिवायत करते हैं सुफ़यान से वह अबू इसहाक़ से और वह अबदुर्रहमान बिन साद से वह कहते हैं हज़रते इबने उमर का पैर सुन्न हो गया तो किसी ने उनसे कहा उसे याद करो जिस्से सबसे ज़्यादा मुहब्बत करते हो तो उन्होने या मुहम्मद ! पुकारा (और पैर ठीक हो गया)”

एक एतराज़ का जवाब

<u>सवाल :</u> क़ुरआन में अल्लाह फ़रमाता है :

وَلَا تَدۡعُ مِنۡ دُوۡنِ اللهِ مَا لَا يَنۡفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ

“और अल्लाह के सिवा किसी को न पुकारो जो न तेरा भला कर सकें न बुरा”

<u>जवाब :</u> इन जैसी आयात में जहाँ कहीं भी लफ़्ज़े دعا आया है वहाँ मुराद पूजना है न की पुकारना (देखो जलालैन वग़ैरह) और सही तरजुमा हुआ “ और अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो” यह बात इस आयत से भी वाज़ेह होती है।

وَمَنۡ يَّدۡعُ مَعَ اللهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ

“और जो अल्लाह के सिवा किसी रब को पुकारे(पूजे)”

मालूम हुआ के अल्लाह के सिवा किसी को अल्लाह समझकर पुकारना शिर्क है न की सिर्फ़ पुकारना, और हम हुज़ूर को या औलिया को अल्लाह का बंदा समझते हैं न कि अल्लाह।

An Najm Islamic Media

क़ुरआन , हदीस व फ़िक़्ह के मसाइल को आम करने और आम मुस्लमानों को अपने दीन से आशना कराने की एक कोशिश का नाम है "अन नज्म इस्लामिक मीडिया" (*An Najm Islamic Media*) जो की यू-ट्यूब के ज़रिये पैग़ामे इस्लाम को आम कर रही है। इस चैनल को **सबस्क्राइब** करके आप सुन सकेंगे इस्लाही बयानात, फ़िक़्ही मसाइल, दर्से हदीस, दर्से क़ुरआन, तिलावते क़ुरआन, नातो मन्क़बत और इश्क़े मुस्तफ़ा का जाम पिलाते हुए पुर कैफ़ ख़ुसूसी बयानात। जय्यद उलेमा व मुफ्तीयाने किराम की ज़ेरे निगेहदाश्त यह सभी मुस्लमानों के लिये एक आसान ज़रिया है। क़ुरआन, हदीस व फ़िक़्ह सीखने का।

तो अभी यू-ट्यूब पर *An Najm Islamic Media* को **सबस्क्राइब** करें।

हज़राते गिरामी ! इसी तरह के और भी बहुत सी दीनी किताबें , फोल्डर , पैम्फलेट वग़ैराह "ज़ीरो प्रॉफिट" *Zero Profit* पर हमारी तरफ़ से छापे जाते हैं अगर आप इनमें ताव्वुन या इश्तिहार देना चाहते हैं तो हमसे राब्ता क़ायम करें 9837777689 और आपसे गुज़ारिश है की हमारे चैनेल को सुन कर अपना अमली ताव्वुन करें और अपने तास्सुरात, मशवरे , सलाह हमें ज़रूर दें और आप यह सब इसी न0 पर हमें व्हट्सएप (Whatsapp) के ज़रिये भी दे सकते हैं।

अल्लाह ﷻ हमें अपने हबीब ﷺ के सदक़े दीने मतीन की ख़िदमत का जज़्बा अता फ़रमाये। आमीन!



الصّلوٰةُ وَالسَّلَامُ عليك يا رسول الله
و على آلك و اصحابك يا حبيب الله



पुकारो

या रसूलल्लाह ﷺ

- ★ क़ुरआन से सुबूत
- ★ हदीस से सुबूत
- ★ फरिश्तों का अमल
- ★ बुज़ुर्गों का अमल
- ★ अहले मदीना का अमल
- ★ इबने उमर का अमल

पेशकश

अहले सुन्नत व जमाअत

शायकरदा :

अन नज्म इस्लामिक मीडीया

(यू-ट्यूब चैनल)

8527632019,9837777689

पेशे लफ़्ज़

نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم

हमद है उस पाक रब की जिसने आलम पर एहसाने अज़ीम किया अपने हबीब को भेजकर और करोड़ों दुरूद उन प्यारे आक़ा ﷺ पर जो तमाम आलम के लिये रहमत बन कर तशरीफ़ लाये।

हज़रात हमारे हुज़ूर ﷺ अल्लाह के महबूब हैं और नाइबे कुल हैं और अल्लाह ने आपको तमाम जहान का मालिक बनाया और हमारे नफ़अ नुक़सान का मालिक बनाया।

एक क़दीम ज़माने से यह उम्मत अपने ग़ैब दाँ नबी ﷺ को पुकारती आयी है और हुज़ूर ﷺ को पुकारना यह क़ुरआन, हदीस, मलाइका के अमल, सहाबा के अमल और अकाबिरीने उम्मत के अमल से साबित है।

याद रहे कि जब उम्मत में से कोई हुज़ूर ﷺ को पुकारता है तो वहाँ पुकारने से मुराद मदद चाहना होता है। जब आगे हम साबित करेंगे कि हुज़ूर ﷺ को दूरो पास से, क़ब्लो बादे विसाल पुकार सकते हैं तो दो बातें ख़ुद ब ख़ुद साबित हो जाती हैं, एक यह कि हुज़ूर ﷺ हयाते हक़ीक़ा के साथ ज़िंदा हैं और दूसरी यह के आप ﷺ हाज़िरो नाज़िर हैं।

अल्लाह हक़ क़ुबूल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

आमीन।

क़ुरआन से सुबूत

क़ुरआन में अल्लाह ने जा ब जा हुज़ूर ﷺ को निदा दी है। कभी **یاایھاالنبی** (ए ग़ैब बताने वाले) कहीं **یاایھاالرسول** (ए पैग़म्बर) कभी **یاایھاالمزمل** (ए चादर पोश) कहीं **یاایھاالمدثر** (ए बाला पोश) इन सभी अयतों में हुज़ूर ﷺ को पुकारा गया है। क़ुरआन ने बाक़ी नबीयों को भी पुकारा मगर उनके नाम से जैसे **یاآدم یایحیی یاموسی یاعیسی** मगर प्यारे हबीब को प्यारे प्यारे अलक़ाब से पुकारा गया।

और यही नहीं बलकि अल्लाह ने अपने हबीब ﷺ को पुकारने का अदब मुसलमानों को सिखाया फ़रमाया :

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا

“रसूल के पुकारने को आपस में एसा न ठहरा लो जैसा तुम एक दूसरे को पुकारते हो।” (अल नूर 63)

इस आयत में तालीम दी गयी कि अगर महबूब को पुकारो तो अच्छे अलक़ाब से पुकारो, या रसूलल्लाह ﷺ कहो, या हबीबल्लाह ﷺ कहो, या नबीअल्लाह ﷺ कहो।

वाज़ेह हुआ कि हुज़ूर ﷺ को पुकारना क़ुरआन से साबित है।

हदीस से सुबूत

इबने माजा शरीफ़ बाब सलातुल हाजत में :

हज़रते उसमान बिन हनीफ़ رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि एक ना बीना शख़्स हुज़ूर ﷺ की बारगाह में हाज़िर हुआ और यूँ दुआ की :

“ए अल्लाह मैं तुझसे माँगता हूँ और तेरी तरफ़ हुज़ूर नबीये रहमत के साथ मुतवज्जेह होता हूँ। या मुहम्मद मैंने आप के ज़रीये से अपने रब की तरफ़ तवज्जेह की ताकि पूरी हो। ए अल्लाह मेरे लिये हुज़ूर की शफ़ाअत क़ुबूल फ़रमा।”

यह दुआ उम्मत को सिखायी गयी जिसमें पुकारना भी है और मदद मांगना भी।

मुसलिम शरीफ़ बाब हदीसे हिजरत में :

हज़रते बरा رضی اللہ عنہ से रिवायत कि जब हुज़ूर ﷺ हिजरत फ़रमा कर मदीना पाक दाख़िल हुये।

فصعدا الرجال والنساء فوق البیوت وتفرق العلمان والخدام فی الطرق ینادون یا محمد یا رسول اللہ یا محمد یا رسول اللہ

“तो औरतें और मर्द घरों की छतों पर चढ़ गये और बच्चे और ग़ुलाम गली कूचों में मुतफ़र्रिक़ हो गये नारे लगाते थे **या मुहम्मद, या रसूलल्लाह, या मुहम्मद, या रसूलल्लाह**

इस हदीस से नारए रिसालत का सुबूत मिलता है और साबित होता है कि सहाबा भी हुज़ूर ﷺ को पुकारते थे।

बुज़ुर्गों का अमल

क़दीम ज़माने से उलमाये उम्मत रसूलल्लाह ﷺ को पुकारते आये हैं और अपने अपने तौर पर अपने कलाम में इस बात का ज़िक्र भी करते आए हैं।

क़सीदा बुरदा शरीफ़ :

یا اکرم الخلق مالی من الوذ بہ   سواک عند حلول الحاھث العمم

“ ā ”

इमाम ज़ैनुल आबिदीन अपने क़सीदा में फ़रमाते हैं :

یا رحمۃ للعلمین ادرک لزین العابدین

محبوس ایدی الظلمین فی موکب والمزدحم

“ ə ə ”

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा लिखते हैं :

یا سید السادات جئتک قاصدا   ارجو رضاک واحتمی بحماک

“ f Ĉ ā ə ”

मौलाना जामी फ़रमाते हैं :

زمجوری برآمد جان عالم   ترحم یا نبی اللہ ترحم

نہ آخر رحمۃ للعلمینی   زمحروماں چرا فارغ نشینی

“ é é ? ?”

इन सभी अशआर में हुज़ूर ﷺ को पुकारा भी गया है और आपसे मदद भी मांगी गयी है। मालूम हुआ कि नबी ﷺ को पुकारना न शिर्क है न बिदअत है वरना इमाम ज़ैनुल आबिदीन, इमामे आज़म, इमाम बुसीरी, मौलाना जामी व ग़ैरह ऐसा न करते।